SURESH GYAN VIHAR UNIVERSITY, JAIPUR
(CDOE, SGVU)

Program Project Report (PPR)

MASTER OF ARTS IN
HINDI

Table of Contents

S. No.	Particular	Page No.
1	Program Mission and Objectives	3
2	Relevance of Program with Suresh Gyan Vihar University, Jaipur Mission and Goals Nature of Prospective Target Group of Learners	3-4
3	Appropriateness of program to be conducted in ODL mode to acquire specific skills and Competence	4
4	Instructional Design	5-31
5	Procedure for Admission, Curriculum Transaction and Evaluation	31-32
6	Requirement of the Laboratory Support and Library Resources	33
7	Cost Estimate of the Program and the Provisions	33
8	Quality assurance mechanism and expected Program Outcomes	34

Program Project Report

1. Program Mission and Objectives

Suresh Gyan Vihar University, Jaipur, established in 2008, is a leading private University of Rajasthan. SGVU, Jaipur is accredited with Grade A+ by the National Assessment and Accreditation Council (NAAC), and offers courses like Engineering, Management, Hotel Management, Pharmacy, Arts, Humanities, Law, Agriculture, etc. in conventional mode. SGVU is renowned for its innovative academic practices, brilliance in technical education, and consultancy to high-profile industries.

The program's mission is to impart, train, and transform a student completely for high caliber competence through the latest concepts and technology and equip the students as per the demands of the industry.

The program aims to achieve the following objectives

i. To provide an opportunity to get an MA (Hindi) degree to those who find it difficult or even impossible to pursue regular MA courses at a university either due to their job commitments or certain other circumstances.

ii. To help the learners, study at their own pace, from their own chosen place.

iii. To provide students with an in-depth understanding of their chosen field of study, including current theories, research methodologies, and significant developments.

iv. To develop students' abilities to critically evaluate existing literature, arguments, and evidence within their field.

v. To encourage the integration of knowledge from various disciplines, promoting a more holistic understanding and innovative approaches to solving complex problems.

vi. To instill a strong sense of ethical responsibility and an understanding of the ethical implications of research and professional practice within their discipline.

2. Relevance of the Program with Suresh Gyan Vihar University, Jaipur Mission and Goals

Suresh Gyan Vihar University (SVGU) was established with a vision to become a University with a commitment to excellence in education, research, and innovation aimed towards human advancement.

The proposed program is highly relevant to the SVGU's mission i.e.

- Facilitate holistic education through knowledge sharing, skilling, research, and development.
- Integrate academic and research work towards the nation's development.
- Mentor students' physical, mental, emotional, secular, and spiritual attributes to become a valued human resource as it aims to provide quality education to those aspiring candidates who are deprived of higher education due to the limited number of intakes in the conventional mode of education in the Universities.

Moreover, to keep the quality intact the curriculum and syllabus have been designed at par with the conventional mode keeping in mind the specific needs and acceptability of the learners' ODL mode and in keeping with the aims and objectives of the University also ensuring the industry and future skills relevance.

Nature of Prospective Target Group of Learners

The curriculum of MA is designed in such a way that it helps the students to become not only more employable but also encourages them to become entrepreneurs. Primarily the target group of learners will be:

- Those deprived of admission in the regular mode due to limited intake capacity.
- Those employed in various organizations who desire to pursue higher education as a passion or as a means for movement up the promotional ladder.
- Dropouts primarily due to social, financial and economic compulsions as well as demographic reasons.
- Population of any age and those living in remote areas where higher education institutes are not easily accessible.

3. Appropriateness of program to be conducted in ODL mode to acquire specific skills and competence

The degree would be of most value to students which can support the development of critical thinking, research skills, and subject-specify.

4. Instructional Design

The curriculum is designed by experts in the field of Arts and has taken into account to include

relevant topics that are contemporary and create environmental awareness. It is approved by the BoS (Board of Studies), the CIQA (Centre for Internal Quality Assurance), and the AC (Academic Council) of the university.

Semester	Course Code	Paper	Credit	Contact Hours	Internal	External	Total
1	HNL-501	प्राचीन एवं पूर्व मध्य कालीन काव्य	05	15	30	70	100
1	HNL-502	साहित्यिक निबंध -1	04	12	30	70	100
1	HNL-503	भारतीय काव्य शास्त्र के सिद्धात	04	12	30	70	100
1	HNL-504	हिन्दी उपन्यासकार प्रेमचंद पर विशेष अध्ययन	05	15	30	70	100
2	HNL-505	साहित्यिक निबंध -2	05	15	30	70	100
2	HNL-506	गद्य विधाए	05	15	30	70	100
2	HNL-507	आधुनिक काव्य	04	12	30	70	100
2	HNL-508	छन्द शास्त्र एवं काव्य शास्त्र	04	12	30	70	100
3	HNL-509	हिन्दी साहित्य का इतिहास -आदिकाल	05	15	30	70	100
3	HNL-510	हिन्दी साहित्य का इतिहास -भक्तिकाल	04	12	30	70	100
3	HNL-511	भाषा विज्ञानएवं हिन्दीभाषा	05	15	30	70	100
3	HNL-512	आधुनिक काव्य -2	04	12	30	70	100
4	HNL-513	हिन्दी साहित्य का इतिहास-रीतिकाल	05	15	30	70	100
4	HNL-514	हिन्दी साहित्य का इतिहास-आधुनिक काल	04	12	30	70	100
4	HNL-515	कथेतर गद्य विधाए	05	12	30	70	100
4	HNL-516	हिन्दीउपन्यास	04	12	30	70	100
4	HNL-517	संस्थागत परियोजना कार्य	8	12	30	70	100
Total Credits			**80**				

SYLLABUS-
MA HINDI (Semester – 1)
प्राचीन एवं पूर्व मध्य कालीन काव्य 501

अधिगम परिणाम

विद्यार्थी समझनें में सक्षम होगें

- **विद्यार्थियों को प्राचीन काव्य से परिचित करवाना इससें उनमें कल्पना शक्ति का विकास होगा।**
- **विद्यार्थी मध्यकालीन कवि एवं उनकी काव्य. विशेशताओं के बारे में जान सकेगें**
- **उनको काव्य में निहित मूल भावो से परिचित करवाना।**
- **विद्यार्थी भक्तिकालीन काव्यधारा के कवियों का अध्ययकर सकेगें**

इकाई- 1

चन्द बरदाई पद्मावती समय

चन्द बरदाई पद्मावती समय -सम्पादित हजारी प्रसाद द्विवेदी और नामवर सिंह

इकाई- 2

कबीर ग्रंथावली

कबीर ग्रन्थावाली

कबीर ग्रन्थावाली संपादकए डॉ. श्याम सुन्दर दास- पारम्भिक 50 दोहे

इकाई 3

मलिक मुहम्मद जायसी: पद्मावत

मलिक मुहम्मद जायसी पद्मावत-संपादिक-आचार्य रामचन्द्र शुक्लए नागमती वियोगखण्ड

इकाई 4

सूरदास - भ्रमरगीतसार

सूरदास - भ्रमरगीत सार-संपादक-आचार्य राम चन्द्र शुक्ल पद संख्या- 7, 8, 23, 30, 41, 42, 52, 57, 64, 69, 70, 85, 90, 94, 97, 101, 104, 105, 116, 134, 143, 155, 166, 186, 194, 210, 220, 221

इकाई 5

तुलसीदास: रामचरित मानस यउत्तरकांड

तुलसीदास - रामचरित मानसए गीता प्रेस यउत्तराकांड के आरम्भिक 40 दोहे

संदर्भ पुस्तके

- कबीरवाणी-तिवारी पारसनाथए अनीता प्रकाशनए नई सड़कए दिल्ली।
- कबीर (जीवन और दर्शन) चंडक राम निवासए नागरी प्रचारिणी सभाए वाराणसी।
- कबीर-एक अनुशीलन वर्मा रामकुमारए साहित्य भवनए इलाहाबाद।
- कबीरवाणी-ज्ञानामृत आचार्य रामानुज सरस्वतीए मनोज पब्लिकेशनए दिल्ली।
- सूरसागर सूरदास कृत।
- सूर की काव्य कला गौतम मनमोहनए भारतीय मन्दिर।
- सूरदास के पद गुप्ता संजयए राजा पाकेट बुक्सए दिल्ली।
- रामचरितमानस-साहित्यिक मूल्यांकन पाण्डेय सुधकरए राधकृष्णन प्रकाशनए दिल्ली।
- गोस्वामी तुलसीदास मीना मनिशिखाए प्रभात प्रकाशन।
- तुलसी दास शिवसरन रामए एस.रामए वेदाम बुक्स।
- हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि - डॉ. द्वारिका प्रसाद

साहित्यिक निबंध -1 502

अधिगम परिणाम

विद्यार्थी समझनें में सक्षम होगें

- विद्यार्थी आधुनिक हिन्दी नाटय साहित्य का विकास एवस्वरूप का अध्ययन कर सकेगें ।
- वे नाटक के उददेष्य एवं विषेषताओं का अध्ययन कर सकेगें ।
- वे मोहन राकेष के हिन्दी नाट्य साहित्य में योगदान का अध्ययन कर सकेगें
- वे समकालीन हिन्दी रंगमंच और मोहन राकेष के नाटको की समीक्षा कर सकेगें।
- वे मोहन राकेष के हिन्दी गद्य साहित्य में योगदान को स्पष्ट कर सकेगे ।

इकाई 1

आधुनिक युग में हिन्दी नाटङ्क साहित्य का विकास और स्वरूप

नाटक का वैशिष्ट, संस्कृत नाट्य परम्परा, लोकनाट्य और हिंदी नाट्य परम्परा,
हिन्दी नाट्य परम्परा, नाटक साहित्य और आधुनिक काल का स्वरूप, भारतेन्दु युग में नाटक का स्वरूप,
प्रसाद युग में नाटक, प्रसादोत्तर युग, स्वातन्त्रायोत्तर युग, उपसंहार

इकाई 2

मोहन राकेशः व्यक्तित्व एवं कृतित्व

व्यक्तित्व, कृतित्व, कथेत्तर साहित्य, निष्कर्ष

इकाई 3

विशेष साहित्यकारः नाटककार मोहन राकेश

मोहन राकेश के नाटक और रंगमंच की परिकल्पना, नाटक और रंगमंच का संबंध, नाटकों के प्रस्तुतिकरण को लेकर मोहन राकेश, मोहन राकेश के नाटकों का मंचन, मोहन राकेश के नाटक और रंगमंच, मोहन राकेश के नाटकों में रंगमंचीय नए प्रयोग, मोहन राकेश के नाटकों में दृश्य विधान में संकेत, नाटक की रचना–प्रक्रिया तथा अभिनेयता, मोहन राकेश का नाट्य–चितंन रंगमंच सम्बन्धी अवधरणा, मोहन राकेश का रंगमंचीय निर्देश, ध्वनि संयोजन, संगीत योजना, वेशभूषा तथा रूप विन्यास, अभिनय और अभिनेता, रंगशिल्पगत तुलनात्मक अध्ययन, रंगमंच और शिल्प, रंगदीपन, शब्द और रंग
का मेल, समकालीन हिन्दी रंगमंच और मोहन राकेश के नाटक, उपसंहार

इकाई 4

मोहन राकेश के नाटक और शिल्पगत दृष्टिकोण

इतिहास और मिथक, रंग निर्देशः रंगमंचीय नवीनता, नाटङ्क वस्तु और विन्यास शिल्प, चरित्रा परिकल्पना और संरचना, रसानुभूति का स्वरूप, वस्तु संप्रेक्षण और रंगतंत्रा पहचान, नाटङ्क भाषा के विविध पक्षों की पहचान, हरकत की भाषा प्रेक्षक संदर्भ और नाट्य संरचना, नाटकीय संरचना

इकाई 5

मोहन राकेश का नाट्य चिंतन और कला

प्रस्तावना, कहानी साहित्य, उपन्यास साहित्य, निबंध साहित्य, यात्रा विवरण, संस्मरण, डायरी और अनुवाद साहित्य, नाटक एवं एकांकी साहित्य, मोहन राकेश के नाटकों में जीवन सत्य, मोहन राकेश के नाटकों में अस्तित्ववादी चिंतन, मोहन राकेश के नाटकों में साहित्यिक चिंतन, नाटककार और रंगमंच, नाटक रचना प्रक्रिया, नाटक भाषा योजना, मोहन राकेश के नाटक, आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस कथा वस्तु का क्रमिक विकास, आधे अधूरे, पैर तले जमीन

संदर्भ पुस्तके

- गिरीष रस्तोगी – मोहन राकेष और उनके काव्य
- गिरीष रस्तोगी – मोहन राकेष और आषाढ का एक दिन
- हिंदी नाटक उद्भव और विकास, राजपाल एंड संस, दिल्ली
- डॉ. देवराज – भारतीय संस्कृति, प्रकाशन विभाग, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेष।
- डॉ. नगेन्द्र – आधुनिक हिंदी नाटक, साहित्य रत्न भंडार, आगरा।
- अनुपमा ष्षर्मा – मोहन राकेष के नाटकों में मिथक और यथार्थ
- अर्चना त्यागी – नाट्य साहित्य में लोकतत्व, निर्माण प्रकाषन दिल्ली
- उपेन्द्र नारायण सिंह – आधुनिक हिंदी नाटकों पर आंग्ल नाटकों का प्रभाव, हिंदी साहित्य संसार, पटना
- डॉ. उमाषंकर सिंह – हिंदी के समस्या नाटक, ऊर्जा प्रकाषन, इलाहबाद
- डॉ.ओमप्रकाष सारस्वत – बदलते मूल्य और आधुनिक हिंदी नाटक, मंथन पब्लिकेषन, रोहतक
- क्रांति कनाटे – भारतीय नाट्य रंग, अखिल भारतीय साहित्य परिषद, दिल्ली
- डॉ. गिरिजा सिंह – हिंदी नाटकों की षिल्प विधि, लोक भारती प्रकाषन, इलाहाबाद
- गिरिष रस्तोगी – हिंदी नाटक सिद्धांत और विवेचन, ग्रंथम , कानपुर
- गिरीष रस्तोगी – मोहन राकेष और उनके काव्य

अधिगम परिणाम

विद्यार्थी समझनें में सक्षम होगें

- विद्यार्थी भारतीय साहित्यषास्त्र के विकासक्रम का अध्ययन कर सकेगें
- वे रस के स्वरूपो का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें
- विद्यार्थी अलंकार सिद्धांत के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेगे
- वे काव्य मे अंलकारो का स्थान एवं महत्व का प्रतिपादन कर सकेगें
- वे साहित्य में रीति षैली के महत्व का प्रतिपादन कर सकेगें

इकाई 1

भारतीय साहित्यशास्त्र का विकासक्रम एवं रस का स्वरूप

भारतीय साहित्यशास्त्रा का आरम्भ, बाबा जयशंकर प्रसाद के अनुसार, सुश्री महादेवी वर्मा के अनुसार, डा. नगेन्द्र के अनुसार, डा. रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार, हितकारक रचना, ज्ञान राशि का कोश, अंग्रेजी के लिटरेचर, रस शब्द की व्युत्पत्ति एवं परिभाषा, रस के अंग या अवयव, विभाव, संचारी अथवा व्यभिचारी भाव, रस निष्पत्ति, भरत मुनि का रस सूत्रा विवेचन, भट्टलोल्लट का उत्पात्विाद या आरोपवाद, भट्टशंकुक का अनुमितिवाद

इकाई –2

अलंकार सिद्धांत

अलंकार की परिभाषा, अलंकार सि(ान्त, अन्य आचार्यो का मत, अलंकार का स्वरूप, अलंकार का

विकास, अलंकारों के भेद वर्गीकरण, अलंकार के भेद, काव्य मे अलंकारो का स्थान, काव्य में अलंकारों का महत्व, अलंकार और रस, ध्वनि रसवादियों का अलंकार विषयक दृष्टिकोण, अलंकार काव्य के सांध्य है या साधन, अलंकार काव्य के उत्कर्ष के साधन, अलंकार काव्य के उत्कर्षक या अपकर्षक, काव्य का अनिवार्य तत्व रस अलंकार नहीं

इकाई –3

रीति सिद्धांत

रीति शब्द की व्युत्पति, रीति संबंधी विभिन्न काव्यशास्त्रियों के मत, रीति की परिभाषा, रीति के विविध पर्याय, रीति भेद के आधार, रीति और शैली

इकाई –4

ध्वनि सिद्धांत

ध्वनि शब्द की व्युत्पति एवं ध्वनि सिद्धांत का जन्म, ध्वनि सिद्धांत की स्थापना, ध्वनि अथवा ध्वन्यालोक एक युग प्रवर्तक ग्रन्थ, ध्वनि का आधार स्वरूप एवं ध्वनि सिद्धांत की परिभाषा, आधार और स्वरूप, ध्वनि की परिभाषा, ध्वनि और स्फोट सिद्धांत , ध्वनि और शब्दशक्ति, ध्वनि के भेद, ध्वनि के 51 भेद, रस ध्वनि, भाव ध्वनि, रसाभाव, भावाभास, ध्वनि के आधार पर काव्य के भेद, ध्वनि सिद्धांत का महत्व

इकाई –5

वक्रोक्ति सिद्धांत

वक्रोक्ति की परिभाषा, वक्रोक्ति, कुंतकपूर्व वक्रोक्ति विचार, वक्रोक्ति सिद्धांत का स्वरूप, वक्रोक्ति सिद्धांत के भेद, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति सिद्धांत का महत्व

संदर्भ पुस्तके

- भारतीय काव्यषास्त्र – डॉ. हरिष्चन्द्र वर्मा
- भारतीय काव्यषास्त्र – डॉ. सत्यदेव चौधरी
- भारतीय काव्यषास्त्र – डॉ. भगीरथ मिश्र
- सिद्धांत और अध्ययन – गुलाब राय
- भारतीय काव्यषास्त्र की परम्परा – डॉ. नगेन्द्र
- भारतीय काव्यषास्त्र – डॉ. बलदेव उपाध्याय
- साहित्य दर्पण आचार्य विश्वनाथ।
- भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्रा सहदेव चौध्री एवं शान्तिस्वरूप गुप्त
- भारतीय काव्यशास्त्र डॉ. सत्यदेव चौधरी।

हिन्दी उपन्यासकार प्रेमचंद पर विशेष अध्ययन -HNL-504

अधिगम परिणाम

विद्यार्थी सीखने में समर्थ होगें

- विद्यार्थी हिन्दी गद्य–साहित्य की विधाओं के बारे में जान सकेगें
- वे मुंषी प्रेमचंद के व्यक्तिगत एवं साहित्यिक जीवन का अध्ययन कर सकेगें
- विद्यार्थी मुंषी प्रेमचंद के उपन्यास सेवासदन की अंर्तवस्तु का अध्ययन कर सकेगें
- वे मुंषी प्रेमचंद के साहित्य में यथार्थवाद एवं आदर्षवाद को जान सकेगें
- वे मुंषी प्रेमचंद के साहित्य के माध्यम से भारतीय कृषक समाज का अध्ययन कर सकेगें

इकाई – 1

प्रेमचंद व्यक्तित्व एवं कृतित्व
प्रेमचंद के व्यक्तित्व और जीवन दृष्टि
प्रेमचंद का साहित्य
प्रेमचंद की साहित्यिक मान्यताएँ
प्रेमचंद के उपन्यास और हिन्दी आलोचना

इकाई –2

सेवासदन
सेवासदन : अंर्तवस्तु का विश्लेषण
सेवासदन : शिल्प विधान ;औपन्यासिक शिल्पद्ध
सेवासदन : की नायिका– सुमन

इकाई – 3

प्रेमाश्रम
प्रेमाश्रम और कृषि समाज
प्रेमाश्रम युगीन भारतीय समाज और प्रेमचन्द का आदर्शवाद
प्रमाश्रम का औपन्यासिक शिल्प
ज्ञानशंकर का चरित्र

इकाई – 4

रंगभूमि और औद्योगिकरण की समस्या
रंगभूमि पर स्वाधनता आन्दोलन और गाँधीवाद का प्रभाव
रंगभूमि औपन्यासिक शिल्प
सूरदास का चरित्र

इकाई – 5

गबन
गबन और राष्ट्रीय आन्दोलन

संदर्भ पुस्तके

- प्रेमचन्दः सेवासदन प्रथमए सरस्वती सीरीजए
- कायाकल्प संस्करणए 1986 ई
- गबन संस्करणए 1986 ई
- प्रेमचन्द और उनका युग -डॉ. रामविलास शर्मा
- प्रेमचन्द साहित्य कोष -कमल किशोर गोयनका
- कलम का सिपाही –अमृतराय
- प्रेमचन्द : जीवन और कृतित्व: हंसराज रहबर किसानए
- राष्ट्रीय आंदोलन और प्रेमचंद वीर भारत तलवार
- प्रेमचन्द के उपन्यास साहित्य में सांस्कृतिक चेतना : नित्यानन्द पटेल
- प्रेमचन्द : साहित्यिक विवेचन नंद दुलाने वाजपेयी
- कथाकार प्रेमचन्द - मन्मथनाथ गुप्त
- प्रेमचन्द के साहित्य सिद्धान्त नरेन्द्र कोहली
- प्रेमचन्द के उपन्यासों का शिल्प-विधान डॉ. कमल किशोर गोयनका
- रंगभूमि : नये आयाम डॉ. कमल किशोर गोयनका

MA-HINDI (Semester – 2)

साहित्यिक निबंध -2 HNL-505

अधिगम परिणाम ;स्मंतदपदह वनज बवउमेद्ध

विद्यार्थी समझनें में सक्षम होगें:

- विद्यार्थी मोहन राकेष के नाटक आषाढ का एक दिन की कथावस्तु का अध्ययन कर सकेगें ।
- मोहन राकेष के नाटक लहरों के राजहंस में वर्णित प्रतीकात्मकता काल्पनिक एवं ऐतिहासिकता का अध्ययन कर सकेगे ।
- विद्यार्थी मोहन राकेष के नाटक आधे–अधूरे की कथावस्त का अध्ययन कर सकेगें ।
- मोहन राकेष के नाटक आधे–अधूरे में आधुनिकता एवं स्त्री–पुरूष संबंध का विष्लेषण कर सकेगे ।
- विद्यार्थी भारतेन्दु युग का परिचय प्राप्त करने में सक्षम हो सकेगें ।

इकाई 1

आषाढ़ का एक दिन : एक विवेचना

आषाढ़ का एक दिन–तात्विक विवेचन, वस्तु–योजना, पात्र का चरित्र–चित्रण, कथोपकथन अथवा संवाद–योजना, देशकाल–वातावरण, भाषा–शैली, उद्देश्य एवं संदेश, रंगमंच और अभिनेयता

इकाई 2

लहरों के राजहंस : एक विवेचना

नाटक की कथावस्तु, लहरों के राजहंस–प्रवृत्ति एवं निवृत्ति दर्शन, नाम की सार्थकता, प्रतीकात्मकता, काल्पनिकता एवं ऐतिहासिकता, लहरों के राजहंस–उद्देश्य अथवा प्रतिपाद्य, कथोपकथन अथवा संवाद–योजना, लहरों के राजहंस – भाषा–शैली, लहरों के राजहंस – और अभिनेयता, लहरों के राजहंस की रंगमंचीयता, पात्रो का चरित्र–चित्रण, श्यामांग अर्थवता

इकाई 3

आधे–अधूरे : नाटक में अभिव्यक्त संवेदना एवं शिल्प

संवेदना की विविध परिभाषाएँ, संवेदना की अवधरणा, संवदेना के विविध रूप और आधे–अधूरे, आधे–अधूरे की अभिनेयता, आधे–अधूरे की संवाद योजना, आधे–अधूरे : उद्देश्य अथवा प्रतिपाद्य, आधे – अधूरे : आधुनिकता, आधे – अधूरे : युगबोध, आधे–अधूरे : प्रयोगधर्मिता, आध–अधूरे की भाषा शैली, पात्रों का चरित्र–चित्रण, आधे–अधूरे और आधुनिक जीवन के प्रश्न, आधे–अधूरे : चरित्र और समाज, आधे –अधूरे और नाटकीय रंगमंचीय संदभ

इकाई 4

भारतेन्दु युग

नवजागरण तथा आधुनिक बोध, साहित्यिक भाषा के रूप में •खड़ी बोली के उपयोग का आरम्भ एवं विकास, भारतेन्दु युग, राष्ट्रीयता की भावना, सामाजिक दुर्दशा का चित्रण, नई सामाजिक चेतना, जनजीवन का चित्रण, काव्यानुवाद का आरम्भ, ब्रजभाषा का प्रयोग, छन्द अलंकार, काव्य कृतियाँ–नाटक, उपन्यास, इतिहास और पुरातत्व सम्बन्धी, यात्राा वृतान्त, जीवनी, भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता और साहित्य

इकाई 5

द्विवेदी युग

द्विवेदी युग : हिंदी जागरण और सरस्वती, द्विवेदीयुगीन गद्य साहित्य, द्विवेदीयुगीन काव्य की प्रवृत्तियाँ, द्विवेदीयुगीन कविता के आधार बिंदु स्वाधीनता आन्दोलन और द्विवेदी युग का मूल चरित्र, बजभाषा की कविता, •खड़ी बोली की कविता

संदर्भ पुस्तके

- आज के रंग नाटक- गिरीश रस्तोगी
- अंधेर नगरी : सं. गिरीश रस्तोगी, राजकमल प्रकाशन
- जयशंकर प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन- जगन्नाथ शर्मा
- हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास - दशरथ ओझा
- गिरीष रस्तोगी – मोहन राकेष और उनके काव्य
- गिरीष रस्तोगी – मोहन राकेष और आषाढ का एक दिन
- हिंदी नाटक उद्‌भव और विकास, राजपाल एंड संस, दिल्ली
- डॉ. देवराज – भारतीय संस्कृति, प्रकाशन विभाग, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेष।
- डॉ. नगेन्द्र – आधुनिक हिंदी नाटक, साहित्य रत्न भंडार, आगरा।

गद्य विधाए -HNL 506

अधिगम परिणाम ;स्मंतदपदह वनज बवउमेद्ध

विद्यार्थी समझनें में सक्षम होगें:

- विद्यार्थी प्रताप नारायण मिश्र का व्यक्तिगतएवं साहित्यिक जीवन का परिचय को प्राप्त कर सकेगें
- वे ललित निबंध कुटज की अंतर्वस्तु का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें
- विद्यार्थी रेखाचित्र के स्वरूप एव विकास का अध्ययन कर सकेगें
- विद्याथी गद्य–साहित्य की विधा जीवनी के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेगें
- वे जीवनी के माध्यम से प्रेमचंद के चरित्र का अध्ययन कर सकेगें

इकाई–1

निबन्ध : धोखा ; प्रताप नारायण मिश्र

जीवन परिचय, साहित्यिक योगदान, रचना के बारे में, व्याख्या के लिए प्रमु• अंश, मूलपाठ : निबंध

इकाई–2

निबन्ध : कुटज ; हजारी प्रसाद द्विवेदी

हजारी प्रसाद द्विवेदी और उनका निबंध ले•न, कुटज की अंतर्वस्तु, ललित निबंध के रूप में कुटज, कुटज की भाषा–शैली,

इकाई–3

रेखाचित्र : ठकुरी बाबा ;महादेवी वर्मा

रेखचित्र के रूप में ठकुरी बाबा, ठकुरी बाबा में सामाजिक चेतना, ठकुरी बाबा की भाषा और शिल्प, ठकुरी बाबा का मूल्यांकन,

इकाई–4

जीवनी : कलम का सिपाही ;अमृतराय

जीवनी का स्वरूप, जीवनी साहित्य : परंपरा और विकास, कलम का सिपाही : जीवनी साहित्य की अन्यतम उपलब्धि, कलम का सिपाही : वस्तु और संवेदना, कलम का सिपाही : शिल्पगत वैशिष्टय, कलम का सिपाही का मूल्यांकन,

इकाई–5

आत्मकथा : क्या भूलूँ क्या याद करूँ ;हरिवंश राय बच्चन

आत्मकथा के रूप में क्या भूलूँ क्या याद करूँ, क्या भूलूँ क्या याद करूँ की अंतर्वस्तु, क्या भूलूँ क्या याद करूँ में ले•क के विचार, क्या भूलूँ क्या याद करूँ का संरचना शिल्प, क्या भूलूँ क्या याद करूँ का महत्व और उपयोगिता,

संदर्भ पुस्तके

- हिन्दी निबंध : उद्भव और विकास डॉ. ओंकरनाथ शर्मा
- श्रेष्ठ हिन्दी निबंधकार : डॉ. सुरेश गुप्ता
- भारतेन्दु समग्र- हिन्दी प्रकाशन संस्थान
- भारतेन्दु कला - प्रेमनारायण शुक्ल
- भारतेन्दु की विचारधारा - डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
- भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परम्परा- रामविलास शर्मा
- भारतेन्दु की भाषा और शैली -गोपाल खन्ना
- भारतेन्दु ग्रंथावली - संपादक ब्रजरत्नदास
- **हिंदी निबंध साहित्य - रामजी उपाध्याय**
- **निबंध निर्माण - रविन्द्र प्रकाश**
- **हिन्दी निबंध -गंधर्व नारायण**
- धोखा–प्रताब नारायण मिश्र
- क्यॉ भूलू क्यॉ याद करूॅ– डॉ हरिवंष राय

आधुनिक काव्य -HNL-507

अधिगम परिणाम ;स्मंतदपदह वनज बवउमेद्ध

विद्यार्थी समझनें में सक्षम होगें:

- विद्यार्थी मैथिलीषरण गुप्त के जीवन परिचय एवं साहित्यिक भाषा षैली का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- वे यषोधरा काव्य के माध्यम से उपेक्षित पात्र यषोधरा की नारी भावना का अध्ययन कर सकेगें
- वह विरह काव्य के रूप में यषोधरा काव्य की समीक्षा कर सकेगें
- वे साकेत के नवम् सर्ग की कथा योजना अध्ययन कर सकेगें
- वे काव्य के माध्यम से उर्मिला की विरह व्यथा का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें
- वे जयषंकर प्रसाद के साहित्य में ऐतिहासिकता एवं कल्पना का अध्ययन कर सकेगें

इकाई – 1

मैथिलीषरण गुप्त का जीवन परिचय

साहित्यिक परिचय, मैथिलीषरण का हिन्दी साहित्य म ं स्थान

मैथिलीषरण गुप्त की साहित्यिक भाषा–षैली

गुप्त जी युग के प्रतिनिधि राष्टीय कवि

इकाई – 2

यषोधरा काव्य का सिद्धार्थ सर्ग

यषोधरा काव्य का परिचय

सिद्धार्थ सर्ग की व्याख्या

यषोधरा–मैथिलीषरण गुप्त की नारी भावना

यषोधरा–मैथिलीषरण गुप्त का विरह वर्णन

यषोधरा एक चरित्र प्रधान काव्य

यषोधरा काव्य में विरह–वर्णन

इकाई – 3

साकेत का नामकरण, साकेत की प्रबंधात्मकता

साकेत के नवम् सर्ग की कथा–योजना

साकेत में चित्रित उर्मिला–विरह

साकेत में उर्मिला का चरित–चित्रण

साकेत के नवम् सर्ग की गीतात्मकता

हिन्दी काव्य में साकेत का स्थान

इकाई – 4

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' – जागो फिर एक बार

निराला का जीवन एवं साहित्यिक परिचय

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का युगबोध एव ं मानवतावाद

निराला एक क्रांतिकारी एव ं विद्रोही कवि

निराला के काव्य में मुक्त छंद की अवधारणा एव ं प्रयोग

जागों फिर एक बार कविता का उद्देष्य

जागों फिर एक बार कविता में सामाजिक एव ं राष्टीय चेतना

इकाई – 5

जयषंकर प्रसाद का जीवन एवं साहित्यिक योगदान

जयषंकर प्रसाद के साहित्य में ऐतिहासिकता एवं कल्पना

कामायनी – श्रद्धा, इडा और रहस्य, सर्ग

कामायनी का भाव–पक्ष एवं कला–पक्ष

कामायनी काव्य में सरसता और दार्षनिकता

कामायनी काव्य में प्रकृति–चित्रण

संदर्भ पुस्तके

- शुद्ध कविता की खोज- रामधारी सिंह दिनकर
- प्रगतिशील काव्य धारा और केदारनाथ अग्रवाल-डॉ. रामविलास शर्मा
- राजस्थान का हिन्दी साहित्य - अशोक वाजपेयी
- कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ - डॉ. नगेन्द्र
- कामायनी एक पुनर्विचार -मुक्तिबोध
- कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन-डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना

- निराला की साहित्य साधना - डॉ. रामविलास शर्मा
- निराला : आत्महंत आस्था -दूधनाथ सिंह
- अज्ञेय- विश्वनाथ तिवारी
- लम्बी कविताओं का शिल्प विधान - नरेन्द्र मोहन
- मुक्तिबोध - अशोक चक्रधर
- समकालीन काव्य यात्रा - नंद किशोर नवल

अधिगम परिणाम

विद्यार्थी समझनें में सक्षम होगें:

- विद्यार्थी पारम्परिक छंदों का ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम होगें
- वे छंदो की परिभाषा का अध्ययन कर सकेगें
- वे काव्य में छंद के महत्व का समझ सकेगें
- वे अज्ञेय के काव्य में आधुनिक भाव–बोध का अध्ययन कर सकेगें
- विद्यार्थी राष्ट्र कवि के रूप में दिनकर का अध्ययन कर सकेगें

इकाई – 1

पारम्परिक छंद

इकाई – 2

आधुनिक छंद शास्त्र

छंद–विचार, छंद रचना, छंदमयी रचना की विषेषताएं

छंद की परिभाषा, छंद का अर्थ, अंग, वर्ण और मात्रा की गणना।

छंद में संख्या और क्रम, गति, यति/विराम, तुक

छंद के भेद, प्रमुख मात्रिक एवं वर्णिक छंद

काव्य में छंद का महत्व
छंद में बिम्ब एवं प्रतीक

इकाई – 3

अज्ञेय

''अज्ञेय'' का व्यक्तिगत जीवन एवं प्रमुख कृतित्व
अज्ञेय की प्रयोगधर्मिता
अज्ञेय क` काव्य में आधुनिक भाव–बोध
नई कविता और अज्ञेय का योगदान
अज्ञेय : आत्मबा`ध और जीवन दृष्टि

कविता : असाध्य वीणा
असाध्य का सार
असाध्य वीणा का वर्ण्य विषय
असाध्य वीणा का सामाजिक महत्व
असाध्य वीणा – जीवन का परम सत्य

इकाई – 4

रामधारी सि ंह 'दिनकर'
रामधारी सिंह का व्यक्तिगत एव ं कृतित्व परिचय
राष्टं कवि के रूप में दिनकर
दिनकर के काव्य की भाषा शैली
कुरूक्षेत्र काव्य का प्र्थम एव ं द्वितीय सर्ग
दिनकर के काव्य की प्रवृत्तियां
दिनकर का काव्य षिल्प

इकाई – 5

भवानी प्रसाद मिश्र
भवानी प्रसाद का व्यक्तित्व एवं प्रतिनिधि रचनाएं
'सन्नाटा' कविता का सार
गीत–फरोष की रचना – नया भाव बोध

संदर्भ पुस्तके

- पाश्चात्य काव्यशास्त्र –देवेन्द्रनाथ शर्मा।
- पाश्चात्य समीक्षा के सिद्धांत –मैथिली प्रसाद भारद्वाज।
- अज्ञेय - संपादक विद्या निवास मिश्र
- अज्ञेय -विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
- अज्ञेय साहित्य : प्रयोग और मूल्यांकन - डॉ. केदार शर्मा
- अज्ञेय का काव्य : एक पुनर्मूल्यांकन - शम्भुनाथ चतुर्वेदी
- अज्ञेय का कथा साहित्य - ओम प्रभाकर
- अज्ञेय के उपन्यास प्रकृति और प्रस्तुति- डॉ. केदार शर्मा
- हिंदी काव्य में प्रतीकवाद मंगल प्रकाशन, जयपुर
- छायावाद का सौंदर्य शास्त्रीय अध्ययन, डॉ० विमल, राजकमल प्रकाशन, पटना, 1977
- छायावाद का काव्य शिल्प, प्रतिमा कृष्ण बल, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1971

MA-HINDI (Semester – 3)

हिन्दी साहित्य का इतिहास– आदिकाल भ्छस्509

अधिगम परिणाम ;स्मंतदपदह वनज बवउमेद्ध

विद्यार्थी समझनें में सक्षम होगें:

- विद्यार्थी साहित्य का इतिहास दर्षन का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- वे हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा का अध्ययन कर सकेगें।
- वे आदिकाल का सीमांकन ;नामकरण; परिवेष का अध्ययन कर सकेगें।
- वे आदिकालीन साहित्य की प्रमुख धाराओ का ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम हो सकेगे।
- वे आदिकाल की उपलब्धियों का अध्ययन कर सकेगें

इकाई – 1

साहित्य का इतिहास दर्षन
साहित्येतिहास और साहित्यालोचन
हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा
हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की समस्याएँ

इकाई–2

हिन्दी साहित्य का आदिकाल–सीमांकन ;नामकरण; परिवेष
आदिकाल के अध्ययन की समस्याएँ–साहित्यिकता; भाषा एवं
प्रामाणिकता के प्रष्न

इकाई–3

आदिकालीन साहित्य की प्रमुख धाराएँ
क–सिद्ध साहित्य
ख–नाथ साहित्य
ग–जैन साहित्य
घ–रासो साहित्य

इकाई–4

आदिकालीन साहित्य के अन्य पक्ष
क–लौकिक साहित्य
ख–गद्य साहित्य

इकाई–5

आदिकाल की उपलब्धियॉ–भाषा रूप और सम्प्रेषण क्षमता; कथ्य और षिल्प

संदर्भ पुस्तके

- हिन्दी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ. नगेन्द्र (सं)
- आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास डॉ. लक्ष्मीसागर वय
- हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास डॉ.-. रामकुमार शर्मा
- हिन्दी साहित्य का आदिकाल आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
- हिन्दी साहित्य की भूमिका आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
- हिन्दी साहित्य का अतीत (दो भाग) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
- हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास बच्चन सिंह
- हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास रामस्वरूप चतुर्वेदी

हिन्दी साहित्य का इतिहास -भक्तिकाल HNL-510

अधिगम परिणाम ;स्मंतदपदह वनज बवउमेद्ध

विद्यार्थी समझनें में सक्षम होगें:

- विद्यार्थी भक्ति आन्दोलन की सामाजिक एव ं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- वे निर्गुण एवं सगुण भक्ति की प्रमुख धाराएँ और उनकी षाखाओ का अध्ययन कर सकेगें।
- वे भारत में सूफीमत का उदय और विकास एवं सूफीमत के सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- वे भक्ति साहित्य एव ं सामाजिक समरसता का ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम हो सकेगे।
- वे भक्तिकालीन काव्य साहित्य का अध्ययन कर सकेगें

इकाई–1

भक्ति आन्दोलन–सामाजिक एव ं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
भक्ति आन्दोलन और लोक जागरण

इकाई–2

भक्ति साहित्य एव ं सामाजिक समरसता
प्रमुख निर्गुण एवं सगुण कवि
निर्गुण एवं सगुण भक्ति की प्रमुख धाराएँ और उनकी षाखाएँ
भक्तिकाल की सामान्य विषेषताएँ

इकाई–3

भारत में सूफीमत का उदय और विकास
सूफीमत के सिद्धान्त
हिन्दी के प्रमुख सूफी कवि और काव्य ग्रंथ
सूफी काव्यधारा की सामान्य विषेषताएँ

इकाई–4

मीरा पदावली : 71,76,80 85, 91, 93, 99, 102, 108,110 पद

इकाई–5

सूरदास : सूरसागर –सं. डॉ धीरेन्द्र वर्मा
गोकुल लीला –34, 42
उद्धव संदैष – 9 , 102 ,103, 143 ,186 ,187
दादू दयाल : पद 1 से 1,2,3,4,5,6,7 साखी 1 से 10 तक

संदर्भ पुस्तके

- हिन्दी साहित्य की भूमिका आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
- हिन्दी साहित्य का अतीत (दो भाग) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

- हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास बच्चन सिंह
- हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास रामस्वरूप चतुर्वेदी
- कृष्णदास और सूरदास : डा. प्रेमशंकर
- सूरदास- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- सूर निर्णय - प्रभुदयाल मीतल
- सूर सौरभ- डॉ. मुशीराम शर्मा
- सूरदास की काव्य-कला- डॉ. मनमोहन गोतम

भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा HNL-511

अधिगम परिणाम ;स्मंतदपदह वनज बवउमेद्ध

विद्यार्थी समझनें में सक्षम होगें:

- विद्यार्थी भाषा की परिभाषा, एवं विषेषताओं, का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- वे षब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ परिवर्तन के कारण और दिषाओ का अध्ययन कर सकेगें।
- वे ंहिन्दी भाषा का उद्भव और विकास का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- वे संधि और समास को व्याकरणिक दृष्टि से समझने में सक्षम हो सकेगे।
- वे हिन्दी की उपभाषा और बोलियों का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।

इकाई–1

क. भाषा–परिभाषा, विषेषताएॅ, भाषा और बोली, भाषा परिवर्तन के कारण
ख. भाषा विज्ञान– परिभाषा, अंग, . भाषा विज्ञान का ज्ञान की अन्य ष्षाखाओं से संबंध

इकाई–2

क. स्वनिम विज्ञान– स्वन की परिभाषा, वागीन्दि्रयॉ, स्वनों का वर्गीकरण–स्थान और प्रयत्न क` आधार पर, स्वन परिवर्तन के कारण एवं दिषाएॅ
ख. रूपिम विज्ञान–ष्षब्द और रूप पद पद विभाग–नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात
व्याकरणिक कोटियॉ–लिंग, वचन, पुरुष, कारक, पद परिवर्तन के कारण

इकाई–3

क.वाक्य विज्ञान–वाक्य की परिभाषा, वाक्य क` अनिवार्य तत्व, वाक्य के प्रकार, वाक्य परिवर्तन के कारण
ख.अर्थ विज्ञान–ष्षब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ परिवर्तन के कारण और दिषाएॅ

इकाई–4

क. हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास
ख. हिन्दी की उपभाषाएॅ और बोलियॉ
ग. राष्ट्भाषा, राजभाषा एव ं सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी

घ. देवनागरी लिपि की विषेषताएँ और मानकीकरण, हिन्दी की मानक वर्णमाला

इकाई–5

हिन्दी में ष्षब्द निर्माण की प्रक्रिया और रूपों का विकास
क. संज्ञा, सर्वनाम, विषेषण, क्रिया, क्रिया विषेषण
ख. उपसर्ग और प्रत्यय
ग. संधि और समास
घ. तत्सम, तद्भव, देषज और विदेषज षब्द

संदर्भ पुस्तके

- भाषा विज्ञान 2. भाषा विज्ञान डॉ. भोलनाथ तिवारी, किताब महल, इलाहबाद
- भाषा विज्ञान डॉ द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
- भाषा विज्ञान की भूमिका देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली
- हिन्दी भाषा का इतिहास डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तान एकेडेमी
- हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास डॉ. उदयनारायण तिवारी
- हिन्दी की बोलियों एवं उपभाषाएं: डॉ. हरदेव बाहरी
- भाषा और भाषिकी देवीशंकर द्विवेदी
- भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
- राजस्थानी भाषा डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर
- हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक व्याकरण डॉ. माताबदल जायसवाल
- हिन्दी भाषा और साहित्य डॉ. भोलानाथ तिवारी
- भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी डॉ. रामविलास शर्मा
- भाषा विज्ञान संपादक डॉ. राजमल बोरा, मयूर पेपरबैक्स

आधुनिक काव्य -2
HNL-512

अधिगम परिणाम ;स्मंतदपदह वनज बवउमेद्ध

विद्यार्थी समझनें में सक्षम होगें:

- विद्यार्थी हरिजन गाथा कविता की मूल संवेदना का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- वे कवि धूमिल का जीवन परिचय एवं पटकथा कविता का भावार्थ का अध्ययन कर सकेगें।
- वे ं सतपुडा के जंगल कविता का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- वेश्समय देवता कविता के माध्यम से समय चक्र को समझने में सक्षम हो सकेगे।
- वे हॉकी खेलती लडकियां,कविता में नारी संवेदना को समझने में सक्षम हो सकेगें।

इकाई–1.

हरिजन गाथा – नागार्जुन
पटकथा – धूमिल

इकाई –2.

सतपुडा के जंगल – भवानीप्रसाद मिश्र
कुआनों नदी – सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

इकाई–3.

समय देवता – नरेष मेहता
तालस्टॉय और साइकिल – केदारनाथ सिंह

इकाई–4.

हॉकी खेलती लडकियां, सात भाईयों के बीच चम्पा,
मॉ के लिए एक कविता – अनामिका

इकाई–5.

कुरुक्षेत्र छठा सर्ग – रामधारी सिंह दिनकर
कैदी और कोकिला – माखनलाल चतुर्वेदी

संदर्भ पुस्तके

- कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ- डॉ. नगेन्द्र

- कामायनी एक पुनर्विचार- मुक्तिबोध
- कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन -डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना
- निराला की साहित्य साधना- डॉ. रामविलास शर्मा
- निराला आत्महंत आस्था- दूधनाथ सिंह
- अज्ञेय -विश्वनाथ तिवारी
- लम्बी कविताओं का शिल्प विधान- नरेन्द्र मोहन
- मुक्तिबोध -अशोक चक्रधर
- समकालीन काव्य यात्रा- नंद किशोर नवल -

MA-HINDI (Semester – 4)

हिन्दी साहित्य का इतिहास-रीतिकाल HNL-513

अधिगम परिणाम ;स्मंतदपदह वनज बवउमेद्ध

विद्यार्थी समझनें में सक्षम होगें:

- विद्यार्थी रीतिकाल की तत्कालीन परिस्थितियों का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- वे 'रीति' षब्द की व्याख्या और रीतिकाव्य के लक्षणों का अध्ययन कर सकेगें।
- वे रीतिकाव्य की मूल प्रवृतियों ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- वे रीतिकाव्य की प्रमुख धाराओं को–समझने में सक्षम हो सकेगे।
- वे रीतिकाल की उपलब्धियो को समझने में सक्षम हो सकेगें।

इकाई–1–

रीतिकाल – नामकरण एव सीमांकन
रीतिकाल की तत्कालीन परिस्थितियां : सामाजिक, राजनीतिक,
सास्कृतिक एवं साहित्यिक

इकाई–2–

'रीति' षब्द की व्याख्या और रीतिकाव्य का लक्षण –शास्त्रीय
और साहित्यिक पृष्ठाधार
रीतिकाव्य की मूल प्रवृतियां

इकाई–3–

रीतिकाव्य की प्रमुख धाराऍ–
रीतिबद्ध काव्य –सामान्य विषेषताएं एवं प्रमुख कवि
रीतिसिद्ध काव्य –सामान्य विषेषताएं एवं प्रमुख कवि
रीतिमुक्त काव्य –सामान्य विषेषताएं एवं प्रमुख कवि

इकाई–4–

रीतिकाल की अन्य प्रवृतियां–
भक्तिकाव्य, वीरकाव्य, नीतिकाव्य,
रीतिकाल का गद्य साहित्य
रीतिकाल की उपलब्धियॉ

इकाई–5–

बिहारी– बिहारी रत्नाकर : सं. जगन्नाथदास 'रत्नाकर'प्रथम 50 दोहे
घनानन्द– घनानन्द कवित्त : सं. विष्वनाथ प्रसाद मिश्र
प्रथम 20 छन्द

संदर्भ पुस्तके

- बिहारी की वाग्विभूति विश्वनाथप्रसाद मिश्र, वाराणसी।
- बिहारी का नया मूल्यांकन डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
- स्वच्छंद काव्यधारा और घनानन्द डॉ. मनोहरलाल गौड़, नागरी प्रचारिणी सभा काशी ।
- आनन्द घन डॉ. रामदेव शुक्ल, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली।
- हिन्दी साहित्य की भूमिका आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
- हिन्दी साहित्य का अतीत (दो भाग) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
- हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास बच्चन सिंह
- हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास रामस्वरूप चतुर्वेदी

हिन्दी साहित्य का इतिहास-आधुनिक काल HNL514

अधिगम परिणाम ;स्मंतदपदह वनज बवउमेद्ध

विद्यार्थी समझनें में सक्षम होगें:

- विद्यार्थी आधुनिक काल की पृष्ठभूमि का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- वे आधुनिक काल में साहित्य की नयी प्रवृतियो का अध्ययन कर सकेगें।
- वे आधुनिक कथा साहित्य : उद्भव और विकास का अध्ययन कर सकेगें।
- वे कथेतर गद्य की प्रमुख विधाओं के उद्भव और विकास–को समझने में सक्षम हो सकेगे।
- वे आधुनिक विमर्ष और हिन्दी साहित्य ,मे , भूमंडलीकरण को समझने में सक्षम हो सकेगें।

इकाई–1

आधुनिक काल की पृष्ठभूमि
आधुनिकता का उन्मेा एवं तत्कालीन परिस्थितियॉ
आधुनिक काल में साहित्य की नयी प्रवृतियों का उदय
भारतन्दु युग, द्विवेदी युग, राष्ट्रीय काव्यधारा : प्रमुख साहित्यिक प्रवृतियॉ

इकाई–2

छायावाद , प्रगतिवाद , प्रयोगवाद , नयी कविता एवं स्वात़ंत्रयोत्तर कविता : साहित्यिक प्रवृतियों का अध्ययन

इकाई–3

आधुनिक कथा साहित्य : उद्भव और विकास
कहानी और उपन्यास

इकाई–4

कथेतर गद्य की प्रमुख विधाऍं : उद्भव और विकास
नाटक , निबंध , आला`चना , संस्मरण , रेखाचित्र , आत्मकथा

इकाई–5

आधुनिक विमर्ष और हिन्दी साहित्य ,उत्तर आधुनिकता , भूमंडलीकरण , हाषिए की वैचारिकी और साहित्य

संदर्भ पुस्तके

- हिन्दी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

- हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ. नगेन्द्र (सं)
- आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास डॉ. लक्ष्मीसागर वय
- हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास डॉ. र : 1. रामकुमार शर्मा
- हिन्दी साहित्य का आदिकाल आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
- हिन्दी साहित्य की भूमिका आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
- हिन्दी साहित्य का अतीत (दो भाग) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
- हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास बच्चन सिंह
- हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास रामस्वरूप चतुर्वेदी

कथेतर गद्य विधाए 515

अधिगम परिणाम ;स्मंतदपदह वनज बवउमेद्ध

विद्यार्थी समझनें में सक्षम होगें:

- विद्यार्थी हिन्दी गद्य का विकास साहित्य का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- वे हिन्दी गद्य की विभिन्न विधाओं का का अध्ययन कर सकेगें।
- वे चीनी फेरीवाला : महादेवी वर्मा रेखाचित्र की मानवीय संवेदना का अध्ययन कर सकेगें।
- वे रिपोर्ताज – ऋणजल –धनजल के माध्यम से अतिवृष्टि एवं अनावृष्टि के महत्व –को समझने में सक्षम हो सकेगे।
- वे साक्षात्कार को को समझने में सक्षम हो सकेगें।

इकाई –1

हिन्दी गद्य का विकास
हिन्दी गद्य की विभिन्न विधाएँ– , संस्मरण , रेखाचित्र , आत्मकथा , यात्रावृत , रिपोर्ताज , जीवनी , डायरी , साक्षात्कार

इकाई –2

संस्मरण –दंतकथाओं में त्रिलोचन : काषीनाथ सिंह
रेखाचित्र –चीनी फेरीवाला : महादेवी वर्मा

इकाई –3

यात्रावृत – चीडों पर चॉदनी : निर्मल वर्मा
रिपोर्ताज – ऋणजल –धनजल : फणीश्वरनाथ रेणु

इकाई –4

जीवनी – आवारा मसीहा ;प्रथम एवं द्वितीय पर्व :
विष्णु प्रभाकर
आत्मकथा – अपनी खबर :पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

इकाई –5

डायरी – हॅसते हुए मेरा अकेलापन : मलयज
साक्षात्कार – हजारी प्रसाद द्विवेदी से मनोहर ष्याम जोषी का साक्षात्कार

संदर्भ पुस्तके

- नई कहानी संवेदना और शिल्प राजेन्द्र यादव
- हिन्दी कहानी प्रक्रिया और पाठ सुरेन्द्र तिवारी
- हिन्दी कहानी अंतरंग पहचान डॉ. रामदरश मिश्र
- एक दुनिया समानान्तर सम्पादक राजेन्द्र यादव
- प्रतिनिधि कहानियाँ स्वयंप्रकाश
- कहानी नई कहानी डॉ. नामवर सिंह
- कथाकार मन्नू भण्डारी अनीता राजूरकर
- आवारा मसीहा–विष्णु प्रभाकर
- चीडों पर चॉदनी : निर्मल वर्मा
- हॅसते हुए मेरा अकेलापन : मलयज
- ऋणजल –धनजल : फणीष्वरनाथ रेणु

हिन्दी उपन्यास HNL-516

अधिगम परिणाम ;स्मंतदपदह वनज बवउमेद्ध

विद्यार्थी समझनें में सक्षम होगें:

- विद्यार्थी हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास का अध्ययन कर सकेगें।
- वे उपन्यास गोदान के माध्यम से भारतीय किसान के संघर्ष का अध्ययन कर सकेगें।
- वे प्रेमचन्द के साहित्य में आदर्षोन्मुख यथार्थवाद का अध्ययन कर सकेगें।
- वे षेखर एक जीवनी के कथानक –को समझने में सक्षम हो सकेगे।
- े दिव्या उपन्यास के माध्यम से बौद्धकालीन समाज का अध्ययन कर सकेगें।

इकाई –1

हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास

इकाई –2

गोदान – प्रेमचन्द

इकाई –3

मैला ऑचल – फणीष्वरनाथ रेणु

इकाई –4

षेखर एक जीवनी; भाग 1 , 2 –अज्ञेय

इकाई –5

दिव्या – यषपाल

संदर्भ पुस्तके

- हिन्दी उपन्यास डॉ. सुषमा धवन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा रामदरश मिश्र
- हिन्दी उपन्यास कोष गोपलराय
- उपन्यास का जन्म परमानन्द श्रीवास्तव
- हिन्दी उपन्यास प्रयोक के चरण राजमल दोरा
- साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में युवा का स्वरूप डॉ विमला सिंह, कला प्रकाशन, वाराणसी
- आज का हिन्दी उपन्यास डॉ. इन्द्रनाथ मदान
- हिन्दी उपन्यास का स्वरूप डॉ.शशिभूषण सिंहल
- अधूरे साक्षात्कार नेमीचन्द्र जैन
- प्रतिनिधि उपन्यास, भाग एक, भाग दो डॉ. यश गुलाटी, हरियाणा साहित्य एकेडेमी, चण्डीगढ़।
- मैला ऑचल – फणीष्वरनाथ रेणु
- दिव्या – यषपाल

5. Procedure for Admission, Curriculum Transaction and Evaluation

The proposed program in ODL mode will be conducted by CDOE-SGVU with the support of various departments of the University. Eligibility criteria, course structure, detailed curriculum, duration of program and evaluation criteria shall be approved by Board of Studies and Academic Council, SGVU, Jaipur which are based on UGC guidelines for the program which comes under the purview of ODL mode for award of Degree.

Details of Procedure for admission in which eligibility criteria for admission and fee structure of the course, Curriculum includes Program delivery, norms for delivery of courses in ODL mode, use of IT services to academic support services, course design academic calendar and Evaluation which includes Distribution of Marks in Continuous internal assessments, Minimum Passing criteria and system of Grading formats are given in detail as under.

Procedure for Admission

Students who will seek admission in MA HISTORY program are required to apply through the website of university www.sgvu.edu.in or visit the campus directly.

Minimum Eligibility Criteria for Admission

The minimum eligibility criteria for admission in MA (Hindi) ODL program is a BA (Bachelor of Arts) degree from any Recognized University.

Program Fee and Financial Assistance Policy

Program fees for students for proposed MA (Master of Arts) in various streams offered by CDOE-SGVU Jaipur is Rs. 11, 000 Per year is the tuition fees and 3000 is examination fees. The total fees is Rs. 28000/-

Curriculum Transactions

Program Delivery

The curriculum will be delivered through the Self Learning Materials (SLMs) supported by various learning resources including audio-video aids.

Academic Calendar

		Tentative months schedule(specify months) during Year			
		From (Month)	To (Month	From (Month)	To (Month)

Sr no	Name of the Activity		)		
1	Admission	Jul	Sep	Jan	Feb
2	Assignment Submission (if any)	Oct	Nov	April	May
3	Evaluation of Assignment	Nov	Dec	May	June
4	Examination	Dec	Jan	June	Jul
5	Declaration of Result	Feb	Mar	Aug	Sep
6	Re–registration	Jan	Feb	Jul	Sep
7	Distribution of SLM	Jul	Sep	Jan	Feb
8	Contact Program (Counselling, Practical's, etc.)	Nov	Dec	May	June

Evaluation

The evaluation shall include two types of assessments-

1. Continuous Assessment in the form of assignments (30% Weightage)
2. End Semester Examination, which will be held at the SGVU campus (70% Weightage).

Minimum Passing percentage

The students are considered as passed in a course if they score 40% marks in the Continuous Evaluation (Internal Assessment) and end-semester Examinations (External Assessment).

Marks and Grades

Grades & Grade Points

a. At the end of the Semester / Year every student is assigned a 'Letter Grade' based on his/her performance over the semester in all courses for which he/she had registered.

b. The letter grade and grade point indicate the results of quantitative and qualitative assessment of the student's performance in a course.

c. There are seven letter grades: **A+, A, B+, B, C+, C, D, E (E1 for internal back and E2 for external back), F** that have grade points with values distributed on a 10-point scale.

6. Requirement of the Laboratory Support and Library Resources

Library Resources

CDOE-SGVU has excellent library with all the books required for the course learning and reference books for the course of MA (Hindi). Adequate online learning links and e-learning materials will also be provided to students which will be support students in their learning cycle.

7. Cost Estimate of the Program and the Provisions

The Estimate of Cost & Budget could be as follows (all figures on Annual basis):

1. Salaries: Rs. 30,00,000/- (Approx)
2. Travel: Rs. 30,000/- (Approx)
3. Seminars: Rs. 40,000/- (Approx)
4. SLM Preparation, Printing, Distribution: Rs. 3,00,000/- (Approx)
5. Library: 1,25,000/- (Approx)
6. Courier/Transportation: Rs. 50,000/- (Approx)
7. Infrastructure: Rs. 1,50,000/- (Approx)
8. Computer Labs & Leased Line: Rs. 1,00,000/- (Approx)

8. Quality assurance mechanism and expected Program Outcomes

The quality of the program depends on the course curriculum and syllabus which meets the requirement of the industry and creates the skillful learning in the students. The ultimate aim of MA (Hindi) program in ODL Mode is to enhance skills of the learners as job aspirants, entrepreneurs and seeing them excel in their profession and meeting global standards too by upgrading their career opportunities.

The CDOE, SGVU, Jaipur has constituted Centre for Internal Quality Assurance (CIQA) . The CIQA will do periodic assessment of the ODL learning course material and audio video tutorials and will assure that the quality of learning is maintained and time to time changes are made as per the requirement of the course. The CIQA will also access the quality of assignments, quizzes and end term assessment time to time and required changes will be assured by them to maintain the quality of the learning program. CIQA will assure that the learning is made a truly global experience for the learner along with inculcation of required

skills in the learner as expected program outcome with CDOE, SGVU, Jaipur.

The university will work continuously for the betterment of processes, assessments, teaching methodology, e-learning material improvisation as per four quadrant approach and implementation of the same as per New Education Policy. The University is committed to deliver the best education in all the learning modes with adherence to NEP, UGC and other regulatory guidelines in truly Global sense. To monitor quality of Student Support Services provided to the learners.